1. क एते (ये कौन ?)

पं० बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान' रचित

मुख्य-बिन्दु -

1. आधुनिक संस्कृत काव्य की एक नवीनतम विधा 'गलज्जलिका' (गजल) के रूप में रचित है।

2. 'गलज्जलिका' नामक काव्य-विधा की चर्चा करते हुये प्रो० अभिराजराजेन्द्र मिश्र लिखते हैं कि मानवीय चेतना को झकझोरने में समर्थ अत्यन्त सूक्ष्म मानवीय भाव महाकवियों के द्वारा परिकल्पित होकर वाक्कौशल की सहायता से गजल-गीति के रूप में प्रकाशित होता है। गजल-गीति के भाव सहृदय पाठकों की संवेदनाओं व भावों से संवलित होकर हर्ष अथवा विषाद के रूप में अभिव्यक्त होता है। नेत्रजल की वृष्टि कराने के कारण ही भावपूर्ण गीति को गलज्जला अथवा गलज्जलिका कहा जाता है -

एवमेवेतरे भावा मानवीयाः परात्पराः।
मर्मस्पृशोऽतिसूक्ष्माश्च चेतनान्दोलनक्षमाः॥
भङ्गीभणितिमाश्रित्य मान्यमान्यैः कवीश्वरैः।
परिकल्प्य प्रकाश्यन्ते नूनं गजलगीतके॥
श्रावं श्रावञ्च गीतार्थं नयने वारि वर्षतः।
ध्रुवं हर्षविषादाभ्यां सचेता यदि पाठकः॥
तत एव मया गीतिराख्यातेयं गलज्जला।
गलन्नेत्रजलत्वाद्वा सा गलज्जलिका पुनः॥

प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी ने दो पादों में निबद्ध गीति

को गजल कहा है - 'द्विपादिकाभिर्निबद्धा गीतिर्गजलमुच्यते।' यहाँ प्रत्येक पादयुगल को शेर अथवा मतला ; दो पद्यों के एक चरण को मिसरा कहा जाता है। गजल में पाँच या पाँच से अधिक पादयुगल होते हैं। यहाँ अन्त्यश्रुति को 'रदीफ' एवं उपान्तश्रुति को काफिया और अन्तिम पादयुगल 'मक्ता' कहलाता है। 'मक्ता' में कवि स्वात्माभिप्राय को प्रकट करते हैं।

3. पं० बच्चूलाल अवस्थी का गजल के शिल्प और विधा पर अद्भुत अधिकार है। इनकी गलज्जलिकाएँ अत्यन्त मर्मस्पर्शिनी हैं।

4. प्रस्तुत गजल के माध्यम से कवि ने समाज के ऐसे लोगों को लक्ष्य किया है जो -

(i) स्वभाव से कुटिल धूर्त, धोखेबाज, चालबाज स्वार्थी ठग एवं विश्वासघाती हैं।

(ii) ऐसे लोगों के खाने के दाँत और दिखाने के दाँत अलग-अलग हैं।

(iii) ऐसे लोगों के चौंका और चौंकी अथवा कथनी और करनी में कोई साम्य नहीं है।

(iv) ऐसे लोग समाज में अच्छा बनने या होने का स्वांग या ढोंग रचते हैं तथा भोले भाले एवं सीधे-साधे लोगों को ठगते हैं।

(v) प्रस्तुत गजल के माध्यम से समाज में छद्म रूप में स्थित ऐसे बहुरूपिये से सावधान रहने या सतर्क रहने के लिये प्रेरित किया जा रहा है।

(vi) पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करने वाले युवापीढ़ी के प्रति असंतोष प्रकट किया गया है

यहाँ उन लोगों की निन्दा की गई है, जो समाज व संस्कृति (3) को पथभ्रष्ट कर कुमार्ग की ओर प्रेरित करते हैं।

(i) क एते

अनुवाद

1. नमन्तः ---- एते।

1. सह - साथ-साथ, एक साथ
2. नमन्तः - झुके हुए / विनम्र / विनीत / विनयशील (और)
3. उन्नमन्तः - उतान / उठे हुए / अविनीत / उद्दण्ड
4. क एते (एते कः) ⟶ ये कौन हैं?
5. तुलादण्डचारं - तराजू के दण्ड (की डंडी) के समान भ्रमणशील / गतिशील / अस्थिर
6. चरन्तः - आचरण करते हुए / भ्रमण करते हुए / चलते हुए
7. क एते (एते कः) ⟶ ये कौन हैं?

2. अयो .... क एते।

1. अयोवर्मणा - लोहे के वर्म अर्थात् कवच से
2. सर्वम् - पूरी तरह से
3. आत्मानम् - अपने को { आत्मानम् - अपना, सर्वम् - सबकुछ }
4. आवृत्य - ढँककर / आच्छादित कर
5. अयस्क-अन्तकूपे - चुम्बक के कुएँ के अन्दर / कुएँ में
6. क्षिपन्तः - फेंकते हुए
7. एते क - ये कौन हैं?

3. स्वपन्तं ---- एते ।

1. निरातङ्कम् - आतङ्करहित / भयरहित
2. स्वपन्तं - सोते हुये
3. मृगेन्द्रं - सिंह को
4. डुडुककानिनादैः - छोटे ढोल / दरवाजे की कुण्डी की आवाज / ध्वनि से
5. आतङ्कयन्तः - आतंकित करते हुये / डराते हुये
6. एते के - ये कौन हैं ?

4. प्रदीपस्य ------- एते ।

1. प्रदीपस्य - दीपक का (को)
2. निर्वापणाय - बुझाने के लिये
3. प्रयुक्ताः - प्रयुक्त
4. पतङ्गाः - फतिंगे / कीड़े की तरह
5. समन्तात् - चारों ओर
6. पतन्तः - गिरते हुये
7. एते के - ये कौन हैं ?

5. विहाय ----- एते ।

1. कल्पद्रुमाणाम् - कल्पवृक्षों के
2. प्रसूनानि - फूलों को / पुष्पों को
3. विहाय - छोड़कर / त्यागकर
4. मुदा - हर्ष / प्रसन्नता के साथ / हर्षपूर्वक / प्रसन्नतापूर्वक
5. शल्यतल्पं - बाण की शय्या को (का)
6. वृणन्तः - वरण करते हुये
7. एते के - ये कौन हैं ?

6. हतं ..... एते।

1. पुराणेषु - पुराणों में
2. रक्तबीजं - रक्तबीज
3. हतः - मारा गया
4. श्रुतम: - (ऐसा हमलोगों ने) सुना है
5. रणे - युद्ध में
6. भद्रकाली - भद्रकाली को। (भद्रकाली के साथ)
7. दलन्तं - दलते हुये (दल करते हुये)
8. एते क - ये कौन हैं?

7. सदाचार ..... क एते।

1. सदाचारवादान् - सदाचारवादियों को
2. चेत् - यद्यपि
3. समे - समान रूप से
4. शिक्षिताः - शिक्षित किया गया
5. कर्णे - (तथापि) कान में
6. अवद्यानि - अवद्य/निन्द्य/निन्दा के योग्य
7. क्वणन्तः - शब्द करते हुये/ध्वनि करते हुये
8. एते क - ये कौन है?

8. ऋते ..... एते।

1. मत् ऋते - मेरे बिना/अलावा/अतिरिक्त
2. तव - तुम्हारा
3. प्रीतिपात्रं - प्रेम-पात्र/प्रिय-पात्र
4. कश्चित् - कोई
5. न - नहीं है
6. गले - (फिर भी) गले में
7. बाहुम् आवेष्टयन्तः - बाहु/भुजा को लपेटे हुये/डाले हुये
8. एते क - ये कौन हैं?

9. स्वयं .... एते।

1. न्यायपीठे - न्यायपीठ पर
2. स्वयं - स्वयं.
3. प्रभुत्वं - प्रभुता / स्वामीत्व
4. गृहीत्वा - ग्रहण कर / स्थापित कर
5. परस्वे - दूसरे के लिये
6. स्वतां - अपने से सम्बद्ध / अपने स्वार्थ से सम्बन्धित
7. निर्णयन्तः - निर्णय देते हुये
8. एते क - ये कौन हैं ?

10. परेषां .... एते।

1. परेषां कृते - दूसरों के लिये
2. वारुणीं - शराब / मद्यपान को (का)
3. वर्जयन्तः - वर्जित करते हुये (निषेध करते हुये)
4. सुराभाजनं - शराब के पात्र को / मद्य / मधु के प्याले को
5. शोषयन्तः - अवशोषित करते हुये / सुखाते हुये / शुष्क बनाते हुए / करते हुए
6. एते क - ये कौन हैं ?

11. महत्त्वं ...... एते।

1. मदीयं - मेरे
2. महत्त्वं - महत्त्व को / का
3. वर्णयन्तः - वर्णन करते हुए
4. मिषाद् अत्र - बहाने से यहाँ
5. ते मुखं - तुम्हारे मुख को
6. निर्वर्णयन्तः - एकटक देखते हुये
7. एते क - ये कौन हैं ?

12. अये .... एते।

1. अये - अरे!
2. ब्रुवीध्वम् - (तुमलोग) बोलो।
3. नन्दनं - नन्दन वन में
4. निर्विशन्तो - प्रवेश करते हुये
5. पथः पार्श्वयोः - मार्ग के दोनों पार्श्वों (भागों) में
6. संविशन्तः - सम्यक् रूप से प्रवेश करते हुये
7. एते क - ये कौन हैं?

(ii) क्व यातास्ते (ते - वे; क्व - कहाँ; याताः - चले गये)

1. पं. बच्चू लाल अवस्थी 'ज्ञान' रचित यह रचना भी एक गजल-गीति है
2. यहाँ कवि ने आज के परिवर्तित आधुनिक परिवेश में नारी की भूमिका एवं अधः पतनशील समाज में कर्मयोगी, जितेन्द्रिय सज्जन व्यक्तियों की विद्यमानता का अभाव, योग्यता का सही परख करनेवालों की अनुपलब्धता, सभी क्षेत्रों में जोड़-तोड़ की राजनीति का हावी होना आदि विषयों पर व्यथित मन से प्रकाश डाला है।

अनुवाद

1. दृशो .... यातास्ते।

1. कल्याणि - हे कल्याणि!
2. दृशोरावर्जकाः - नेत्रों के आवर्जक/आच्छादक/संरक्षक
3. ते संभाराः - वे उपकरण
4. क्व याताः - कहाँ चले गये?
5. हृदि - हृदय में
6. स्फूर्जा - आनन्द और आशंकायुक्त प्रथम मिलन को (प्रथम मिलन के उत्साह का)
7. वितन्वानाः - विस्तार करते हुये/संचार करते हुये
8. ते अलंकाराः - वे अलंकार/आभूषण
9. क्व याताः - कहाँ चले गये?

2. इयं ---- यातास्ते।

1. कामम् - भले ही
2. इयं - यह
3. वात्सल्यभूमिः वा - वात्सल्य-भूमि (हों) अथवा
4. दिव्यभूमिः - दिव्य-भूमि
5. भवेत् - हों
6. अभिषु अङ्गा - कामी / विलासी अंगों वाले
7. अनङ्गस्य - अनङ्ग / कामदेव के
8. ते प्रतिहाराः - वे द्वारपाल
9. क्व याताः - कहाँ चले गये ?

3. प्रपञ्चो ..... यातास्ते।

1. विष्वग् - चारों ओर, सर्वत्र (व्याप्त / विद्यमान)
2. प्रपञ्चः - षड्यन्त्र / कपट / छल,
3. वञ्चना - ठग,
4. वाणिज्या - व्यापार की
5. काकिणी-नीतिः - काकिणी-नीति / लेनदेन की नीति / लाभ या आय और व्यय की नीति -
6. अमीभिः - इनसे (
7. मुक्तसाराः - मुक्त संग्रहवाले / सत्ववाले / सौन्दर्यवाले
8. ते अङ्गभृङ्गाराः - वे आङ्गिक (अंगों से सम्बन्धित) शृङ्गार
9. क्व याताः - कहाँ चले गये।

4. जगज्जाल ----- यातास्ते।

1. जगज्जालैः - सांसारिक भ्रम से
2. उताहो - अथवा
3. इन्द्रजालैः - मायाजाल से / जादूगरी से

4. ये अनुबध्नीयुः - जो अनुसरण योग्य हैं / बन्धन में डालने योग्य हैं
5. नमद्भ्रूपक्ष्ममारा - झुकी हुई भौंहे की बरौनी के भार से
6. ते दृष्टिसंचाराः - वे दृष्टि / नेत्र के संचार / नेत्र की चपलता या चञ्चलता
7. कव याताः - कहाँ चले गये / चली गयीं ?

5. शिरो ..... यातास्ते /

1. शिरो / शिरः - शिर को
2. वक्षोजयोः - दोनों स्तनों पर
3. आधाय - रखकर
4. साकूतम् - भावुकता के साथ अथवा अनुरागवश
5. स्मितैः - मन्द मुस्कानों से (मन्द मुस्कानों को)
6. विद्योतमाना - प्रकाशित होती हुई / चमकती हुई (बिखेरती हुई)
7. मे केशेषु - मेरे केशों में
8. ते अङ्गुलीचाराः - वे अंगुली के संचार / चाल / भ्रमण
9. कव याताः - कहाँ चले गये ?

6. अलं ..... यातास्ते /

1. येषां - जिनकी
2. हृणीया - लज्जा
3. वीणाकवने - वीणा की ध्वनि में
4. लीयते - विलीन हो गयी है
5. हृणा - (अब) लज्जा (ऐसी लज्जा की)
6. अलं - व्यर्थ / बेकार है / [कोई आवश्यकता या लाभ नहीं है]

7. प्रतिषेधोत्तरा - प्रतिषेधात्मक उत्तर देनेवाले / अस्वीकृति रूप उत्तर देनेवाले / निषेधात्मक उत्तर देनेवाले
8. ते - वे
9. वाचां परिष्काराः - वाणी के परिष्कार
10. क्व याताः - कहाँ चले गये ?

7. निमेष ...... यातास्ते।
1. नेत्रयोः - नेत्रों की
2. निमेषोन्मेषलीला - पलक गिराने व उठाने की लीला / क्रीड़ा,
3. दन्तच्छदे - ओष्ठ / होंठ में (का)
4. स्पन्दः - स्पन्दन / कम्पन,
5. निचोले - अवगुण्ठन / घूंघट में
6. वेपथुः - कम्पन / थरथराहट
7. ते सर्वे वशीकाराः - वे सभी वशीभूत / सम्मोहित करनेवाले (करनेवाली चेष्टाएँ)
8. क्व याताः - कहाँ चले गये (कहाँ चली गयीं) ?

8. चटु ...... यातास्ते।
1. सप्रतिकाराः - प्रतिकार सहित
2. प्रतीघत - क्रुध - क्रुद्ध
3. चटुव्याहारसौभाग्यं - कृपा तथा चापलूसी से भरे (पूर्ण) शब्दयुक्त आवाज / ध्वनि / स्वर रूपी सौभाग्य
4. प्रतीपं - और इसके विपरीत / इसके विरोध में
5. ते - वे
6. कूणितापाङ्गश्चमत्कारा - बन्द / मुंदी हुई आखों के अपाङ्गभाग अर्थात् बाहरी कोण का चमत्कार
7. क्व याताः - कहाँ चले गये।

2. हाइकु

प्रो॰ हर्षदेव माधव

मुख्य-बिंदु-

1. गुजराती कवि प्रो॰ हर्षदेव माधव आधुनिक संस्कृत साहित्य के क्रान्तिकारी कवि माने जाते हैं। इन्होंने लगभग तीन हजार हाइकु छन्द संस्कृत में लिखे हैं, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं।
2. हर्षदेव माधव ने संस्कृत मोनोइमेज काव्य, तान्का और हाइकु काव्य का सर्वप्रथम प्रयोग कर संस्कृत साहित्य में आधुनिकता लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
3. जापानी काव्य प्रकार हाइकु में संस्कृत काव्य-सर्जन की परम्परा के सर्जक आचार्य प्रो॰ हर्षदेव माधव हैं। इनकी दृष्टि में हाइकु में बिन्दुत्व में सिन्धुत्व प्रकट होता है। इसे एक-श्वासी काव्य भी कहा गया है।
4. हमारे देश में हाइकु काव्य को हाइकु, होडक, सत्तरी, सन्तसप्तरी त्रिदल आदि नाम दिये गये हैं। किन्तु कवि हर्षदेव माधव ने, हाइकु को 'बिल्वपत्र' ऐसा सुन्दर नाम दिया है। पूजा में हजारों पुष्प के होते हुये भी भगवान् शंकर बिल्वपत्र से ही प्रसन्न होते हैं।
5. हाइकु में काव्यबन्ध सत्रह अक्षरों वाला होता है, जिसे सामान्यतः 5-7-5 अक्षरबन्ध में तीन पंक्तियों में बाँधा जाता है।
6. हाइकु की विशिष्टताएँ -

(i) चमत्कृति
(ii) ध्वनि का समावेश
(iii) वक्रोक्ति की स्फुरता
(iv) अर्थगौरवता
(v) लघुता
(vi) कोमल वर्णविन्यास
(vii) वाक्-छटा
(viii) काकु दर्शन
(ix) कल्पना वैभव
(x) प्रतीक, बिम्ब तथा मिथकादि का प्रयोग
(xi) हास्य-व्यंग्य तथा कटाक्ष का समावेश।

अनुवाद

1. स्नानगृहे

1. स्नानगृहं ..... भवति।

1. गृहक्लेशश्रान्ता - घर के कष्ट/दुःख/पीड़ा/वेदना से थकी हुई/क्लान्त हुई/परिश्रान्त हुई
2. वधूः - वधू

3. स्नानगृहं - स्नानघर (को)
4. गत्वा - जाकर
5. निःशब्दं - बिना शब्द / आवाज किये / अथवा चुपचाप
6. सेदिति - सेती है
7. तदा - तब / उस समय
8. स्नानगृहं - स्नानघर
9. तस्याः - उसका
10. पितृगृहं - पिता का घर / पितृगृह
11. भवति - होता है।

(2.) स्नानगृहे ..... स्नाति।

1. स्नानगृहे - स्नानघर में
2. दुःखम् - दुःख / वेदना
3. उष्णजलम् - गर्म जल
4. अस्ति - है,
5. सुखम् - सुख
6. शीतल जलम् - शीतल जल / ठंडा जल
7. अस्ति - है,
8. स्नानी - स्नानी (के समान वह)
9. दुःखसुखसमे - दुःख और सुख को समान भाव / रूप में
10. कृत्वा - स्वीकार कर / ग्रहण कर
11. स्नाति - स्नान करती है।

अथवा
2. उष्णजलम् - गर्मजल
3. दुःखम् - दुःखरूप

5.2 शीतल जलम् ठंडा जल
6. सुखम् - सुखरूप

2. वेदना

① वेदनायाः ..... करोति।

1. वेदनायाः समीपे - वेदना के समीप(में)/पास(में)
2. शब्दाः - शब्द
3. न सन्ति - नहीं हैं
4. अतः - अतः / इसलिए
5. वेदना - वेदना
6. मौनमये - मौनयुक्त होकर / मौन रहकर
7. रिक्तधनादेश पत्रे - रिक्त/खाली चेक पर
8. हस्ताक्षरं - हस्ताक्षर
9. करोति - करती है।

3. मृत्यु : १

① सूर्यो ..... पादाङ्गुष्ठः।

1. सूर्यो - सूर्य
2. मे - मेरी
3. चक्षुः - आँख (हैं)
4. समीरो - वायु
5. मे - मेरी
6. श्वासो - श्वास (हैं)
7. समुद्रो - समुद्र
8. मे - मेरा
9. हृदयम् - हृदय (हैं)
10. निर्झरिण्यो - झरने
11. मे - मेरी
12. चर्मन्यः - चमनियाँ (हैं)
13. हे मृत्यो! - हे मृत्यु!
14. ह्यः - कल (बीता हुआ कल)
15. अहं - मैं
16. वामन - बौना
17. आसम् - था
18. अद्य - आज
19. तव - तुम्हारे
20. शिरसि - शिर पर
21. मे - मेरे
22. पादाङ्गुष्ठः - पैर का अंगूठा (हैं)

(2.) मृत्युः ..... पञ्चदीपाः ।

1. मृत्युः - मृत्यु / मौत
2. मल्हाररागम् - मल्हारराग
3. गायति - गाती है ।
4. पञ्चदीपाः - पञ्चदीप / पाँचों तत्व (पाँच तत्व से शरीर निर्मित हुआ (पञ्चवायु / पञ्चकर्मेन्द्रियाँ)।
5. शाम्यन्ति - शान्त हो रहे हैं ।

(अर्थात् जीवनदीप बुझ रहा है।)

4. खनिः

1. खनेः - खान से
2. कृष्णाङ्गारः - (जला हुआ) काला कोयला
3. बहिः - बाहर
4. आयाति - आता है ।
5. असौ - वह (अब)
6. हरितपर्णं - हरे पत्ते को
7. पश्यति - देखता है
8. तदा - तब
9. शोकेन - शोक से / व्यथा से / दुःख से
10. आत्मानं - अपने को / अपने आप को
11. प्रज्वालयति - जलाता है ।

यहाँ प्रो० हर्षदेव माधव रचित एवं चार शीर्षकों में व्यक्त हाइकु काव्य का आशय क्रमानुसार इस प्रकार है-

1. 'स्नानगृह' कविता में कवि ने वधू की भावविह्वल कारुणिक मनोदशा का मार्मिक चित्रण कर स्त्री के व्यथापूर्ण जीवन की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया है। आज भी समुराल में स्त्रियों को मानसिक अवसाद, मानसिक प्रताड़ना, भेदभावपूर्ण व्यवहार आदि का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक दिन घटित होनेवाले पारिवारिक क्लेश व विभिन्न प्रकार की विसंगतियों के कारण वह वधू शारीरिक व मानसिक रूप से थक जाती है। वहाँ उनकी भावनाओं का सम्मान करनेवाला कोई नहीं है। फिर भी वह अपनी प्रकृति व मर्यादा के अनुरूप सहनशील स्वभाव व आत्मीयता का ही परिचय देती है। गृहक्लेश से परिश्रान्त वधू अपनी मनोव्यथा को शब्द के रूप में अभिव्यक्त नहीं कर सकती है। उनका रुदन-कार्य भी निःशब्द ही व्यक्त होता है। घनीभूत मनोव्यथाएँ केवल आँसूओं के माध्यम से प्रकट होती हैं। आँसुओं का उद्गम सर्वत्र नहीं होता है बल्कि स्नानगृह में अपने मायके अर्थात् पितृगृह का अनुभव करती हुई वहीं स्वाभाविक रूप से उसके अश्रु शब्द किये बिना उमड़ आते हैं। नेत्रजल के बहिर्गत होने से वधू का सन्ताप या उसकी हृदय-वेदना कुछ कम हो जाती है। इसीलिये कवि ने 'स्नानगृह' की समता पितृगृह से की है। स्नानगृह में ही पितृगृह सदृश आत्मीयता का बोध होता है।

2. 'वेदना' कविता के माध्यम से कवि ने मानव-जीवन के कष्टपूर्ण, अवसादपूर्ण अथवा दुःखद आन्तरिक भावों को विवेचन किया है। वेदना शब्द के रूप में अभिव्यक्त नहीं होती है बल्कि भावों के द्वारा व्यक्त होती है। वेदना का संसार व्यापक होता है। वह रिक्त घनादेश की तरह है जहाँ कोई भी कितना भी धन भर सकता है। दोनों ही स्थलों पर सहनशीलता व नियन्त्रण परमावश्यक है। अतः मानव को स्वयं पर नियन्त्रण

स्थापित कर सहनशील होना चाहिये तभी वेदना का निदान सम्भव है।

3. 'मृत्यु:' कविता के माध्यम से कवि ने जीवन की नश्वरता, क्षणभंगुरता व निस्सारता का विवेचन किया है। उनकी दृष्टि में जो व्यक्ति जीवन विषयक इस सत्य को या उसके मर्म को समझ लेता है, वह मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेता है। उसके लिये मृत्यु कोई विषय नहीं रह जाती है। ऐसे मुक्त व्यक्ति परमपद को प्राप्त करते हैं। मृत्यु के विषय में उनका कहना है कि जब मृत्यु मल्हार राग गाती है तब शरीर पञ्चतत्त्व में विलीन हो जाता है। उसके पाँचों दीपक बुझ जाते हैं और प्राणान्त हो जाता है। अत: जीवन में जैसा करेंगे वैसा ही भरेंगे। यहाँ कोई कुछ लेकर नहीं आता है और न ही लेकर जाता है। सत्कर्म से ही मनुष्य की सद्गति होती है।

4. 'ध्वनि:' कविता के माध्यम से कवि ने मानवीय-स्वरूप-ज्ञान और मानवीय मूल्य की शिक्षा प्रदान की है।

Mukesh Kumar Mishra